दर्शन एवं दर्शन का स्वरूप (Philosophy)

विश्व की समस्त अनुभूतियों की बौद्धिक व्याख्या तथा उनके मूल्यांकन के प्रयास को ही 'दर्शन' कहा जाता है। दर्शन शब्द 'दृश' (देखना) धातु से बना है। व्युत्पत्ति के अनुसार दर्शन का अर्थ है - 'दृश्यते अनेन इति दर्शनम्' अर्थात् जिसके द्वारा देखा जाये वह दर्शन है। 'दर्शन' शब्द का अंग्रेजी में अनुवाद प्रायः 'फिलोसॉफी' (Philosophy) शब्द से किया जाता है। यह शब्द 'फिलोस' (Philos) 'फिलॉस' और 'सोफिया' (Sophia) इन दो ग्रीक पदों से मिलकर बना है, जिनका क्रमशः अर्थ है - 'प्रेम' और 'सरस्वती या विद्या देवी'। अतः 'फिलोसॉफी' (Philosophy) का अर्थ हुआ - 'विद्या-प्रेम' या 'ज्ञान के प्रति अनुराग/अन्वेषण'।

दर्शन का स्वरूप (Nature of Philosophy) :→

सर्वप्रथम हम यहाँ दर्शन के स्वरूप पर विचार करने से पहले यह जानते हैं कि दर्शन क्या है? जो कि हमने ऊपर समझ लिया है; परन्तु दर्शन के प्रश्न पर हम पाश्चात्य और भारतीय दोनों दृष्टिकोणों से विचार कर लेते हैं। तत्पश्चात् यह देखेंगे कि क्यों दर्शन की आवश्यकता है? उसकी सीमा एवं प्रयोजन पर विचार करेंगे।

चूंकि मनुष्य विवेकशील प्राणी है तथा वह सतत् नए विषयों का ज्ञान प्राप्त करने में लगा रहता है। मानव मन में स्वयं को और बाह्य जगत् को जानने की उसकी नैसर्गिक प्रवृत्ति होती है। यद्यपि मानव की उत्पत्ति, स्थिति और उसका अंत (लय) बाह्य जगत् में होते हैं, तथापि मनुष्य शरीर, इन्द्रिय, प्राण एवं संघात के अतिरिक्त 'और कुछ' भी है और इसी 'और कुछ' की जिज्ञासा भी स्वभाविक है। दार्शनिक चिंतन मानव की मूल प्रवृत्ति है। प्रत्येक व्यक्ति की कोई-न-कोई जीवन-दृष्टि, जीवन मूल्य या 'दर्शन' अवश्य होती है।

पाश्चात्य दर्शन ने प्रायः बौद्धिक चिंतन को प्रधानता दी है,

यद्यपि कुछ पाश्चात्य दार्शनिकों ने अपरोक्ष ज्ञान की महत्ता स्वीकार की है ; जबकि भारतीय दर्शन प्रायः अपरोक्षानुभूति या आत्म-साक्षात्कार को प्रधानता और बौद्धिक चिंतन को गौण मानता है।

आदिकाल से ही मनुष्य कुछ मौलिक प्रश्नों के समाधान की खोज में लगा हुआ है। इनमें से कुछ मौलिक प्रश्न ये हैं— मनुष्य क्या है? आत्मा क्या है? विश्व क्या है? इसकी उत्पत्ति क्यों और कैसे हुई? क्या विश्व प्रयोजनपूर्ण है या प्रयोजनहीन? ईश्वर क्या है? इसके अस्तित्व का क्या प्रमाण है? सत्यज्ञान क्या है और इसकी प्राप्ति के साधन क्या है? शुभ और अशुभ क्या है? उचित - अनुचित क्या है? व्यक्ति और समाज में क्या सम्बन्ध क्या है? इत्यादि। इन प्रश्नों का उत्तर जब कोई व्यक्ति देना चाहता है, तब वह दार्शनिक बन जाता है और इसी प्रकार के प्रश्नों के समाधान के लिए दर्शन (philosophy) की आवश्यकता पड़ती है। इसी आधार पर दर्शन की यह परिभाषा दी जाती है—

"युक्तिपूर्वक तत्वज्ञान प्राप्त करने के प्रयत्न को ही 'दर्शन' कहते हैं"। इस प्रकार, दर्शन संपूर्ण विश्व को समझने और उसकी संगत व्याख्या करने का एक प्रयास है।

दर्शन की कई परिभाषायें दी गई हैं। लेकिन वास्तव में, दर्शन को किसी परिभाषा-विशेष के अंतर्गत सीमित करना उचित नहीं प्रतीत होता। हम सिर्फ ऐसा कह सकते हैं कि, "अनवरत तथा प्रयत्नशील चिंतन के आधार पर विश्व की समस्त अनुभूतियों की बौद्धिक व्याख्या तथा उनके मूल्यांकन के प्रयास को ही दर्शन की संज्ञा दी जा सकती है।"

इस प्रकार से उपर्युक्त व्याख्यात्मक परिभाषा का विश्लेषण किया जाय तो, दार्शनिक चिंतन एवं उसके स्वरूप की निम्नलिखित विशेषताएँ स्पष्ट दीख पड़ती हैं—

(1) - <u>दर्शन विश्व को उसकी समग्रता में समझने का प्रयास है</u> :—

यहाँ पर दर्शन और विज्ञान में स्पष्ट अंतर

है। विज्ञान विश्व को विभिन्न अंशों में बाँटकर उसका अध्ययन करता है। जैसे भौतिक शास्त्र भौतिक पदार्थों का, रसायनशास्त्र रस, द्रव्य, गैस आदि का और जीवविज्ञान जीव, जीवन आदि का अध्ययन करता है। अध्ययन की यह विधि विश्लेषणात्मक कही जाती है। इसके विपरित दर्शन की विधि संश्लेषणात्मक है। यह विश्व को एकरूप में जानना चाहता है।

(2.) दार्शनिक चिंतन बौद्धिक है :— दार्शनिक व्याख्या सदैव बुद्धि, ठोस प्रमाण और तार्किक युक्ति पर आधृत रहती है। बुद्धि की कसौटी है सामंजस्य अर्थात— व्याघातकता का अभाव। भावनाओं, संवेगों या विश्वास के आधार पर दार्शनिक चिंतन नहीं हो सकता। यहाँ धर्म एवं दर्शन का अंतर स्पष्ट हो जाता है। धर्म भावनाओं एवं विश्वासों पर आधृत है किंतु दर्शन का आधार बौद्धिक है।

(3.) दार्शनिक चिन्तन निष्पक्ष होता है :→ विश्व का अध्ययन करते समय दार्शनिक अपने स्वार्थभाव, राग-द्वेष एवं पक्षपातपूर्ण भावनाओं से पूर्णतया मुक्त हो जाता है। विश्व को उसके यथार्थ स्वरूप में जानना ही उसका लक्ष्य रहता है, इसलिए दार्शनिक चिंतन को निष्पक्ष कहा जाता है। यह आत्मनिष्ठ न होकर वस्तुनिष्ठ हो जाता है।

(4.) दार्शनिक चिंतन का व्यावहारिक उद्देश्य होता है :→ मानव जिज्ञासा को शांत करना ही दर्शन का लक्ष्य है। जब तक दार्शनिक जीवन और जगत का सही अर्थ नहीं जान लेता, तब तक उसका चिंतन अनवरत जारी रहता है। जीवन और जगत को बेहतर समझने पर व्यक्ति अपने जीवन को सुखी बना सकता है। इस प्रकार, जीवन की मौलिक समस्याओं का समाधान प्राप्त करना दर्शन अपना कर्तव्य समझता है।

भारतीय मतानुसार :→ भारतीय दार्शनिकों के अनुसार 'दर्शन' का अर्थ है - साक्षात् देखना अर्थात् परमतत्व का साक्षात्कार या अपरोक्षानुभव। सत्य का साक्षात्कार

हो जाने पर व्यक्ति वास्तविक और मिथ्या का अंतर समझ लेता है। दर्शन से हमें सम्यक दृष्टि प्राप्त होती है। इस सम्यक अन्तर्दृष्टि को साधनों के माध्यम से जाना जाता है और ये साधन हैं - 'श्रुति' और 'तर्क'। भारतीय दर्शन का उद्घोष है - 'आत्मानं विद्धि' (आत्मा को जानो)। आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक, इन तीन प्रकार के दुःखों का आत्यंतिक नाश एवं अखण्ड आनन्द की प्राप्ति ही इसका लक्ष्य है। श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन इस लक्ष्य की प्राप्ति के त्रिविध साधन हैं। इस प्रकार से भारतीय विचारकों के अनुसार दर्शन का उद्देश्य बंधन काटकर व्यक्ति को मोक्ष दिलाना है, इसलिए इसे 'मोक्ष-दर्शन' भी कहा गया है।

उपर्युक्त विवेचन के अतिरिक्त भी कुछ विद्वानों द्वारा दर्शन की परिभाषाएँ दी गई हैं, जो निम्वत् हैं :-

→(1). दर्शन की विज्ञानमूलक परिभाषाएँ :→

(अ). फ्रांसीसी दार्शनिक कॉम्टे → 'दर्शन विज्ञानों का विज्ञान है'।

(ब). हर्बर्ट स्पेन्सर → "दर्शन का सम्बन्ध प्रत्येक वस्तु से है और इस रूप में यह एक सार्वभौमिक विज्ञान है।"

(स). सेलर्स के अनुसार → हमारा विषय है 'विज्ञानों का एकीकरण :- जैसे- ज्ञान का सिद्धांत, तर्कशास्त्र, ब्रह्माण्ड और नीतिशास्त्र, सौन्दर्यशास्त्र का एकीकरण तथा समान्वित सर्वेक्षण करना"।

(द). रसेल के अनुसार → 'दर्शनशास्त्र विज्ञान के आधारों का तार्किक अध्ययन है'।

(य). विट्गेन्सटाइन ने कहा → 'दर्शनशास्त्र विज्ञान के वाक्यों का तार्किक विश्लेषण अथवा भाषा की परीक्षा है'।

→ दर्शन की तत्वमूलक परिभाषाएँ :→

(अ). प्लेटो और अरस्तु ने कहा कि, 'दर्शन शाश्वत तत्व' या 'वस्तुओं के यथार्थ स्वरूप' का ज्ञान है अथवा यह

परमतत्व के यथार्थ स्वरूप का परीक्षण करना है'।

(ब). हीगेल के अनुसार 'दर्शन सत्ता का तत्व-दर्शन है'।

(स). ब्रैडले के अनुसार 'दर्शन लौकिक जगत की अपेक्षा सत्ता जगत को जानने का प्रयास है।

(3). ज्ञानमीमांसा मूलक परिभाषाएँ :⇒

(अ). फिक्टे - 'दर्शन ज्ञान का विज्ञान है।'

(ब). काण्ट ने 'दर्शन' को 'ज्ञान का विज्ञान तथा समालोचना' कहा है।

(स) पैट्रिक - 'दर्शन विचारों की कला है'।

(द). विलियम जेम्स - 'असामान्य रूप से स्पष्टत: विचार करने का दृढ़ प्रयास' कहा है।

(य). डॉ० राधाकृष्णन् ने 'यथार्थता के स्वरूप का तार्किक ज्ञान' कहा है।

इस प्रकार से दर्शनशास्त्र की उपर्युक्त सभी परिभाषाओं के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि 'दर्शन' का उद्देश्य है-जीवन और जगत के विषय में वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने के लिए गंभीर रूप से विचार करना। इस प्रकार से दर्शन का क्षेत्र एवं इसका स्वरूप अत्यंत व्यापक है। मनुष्य और ब्रह्माण्ड के सम्बन्धों में अनेक प्रकार के प्रश्न हैं, जिनके मौलिक पक्षों के विषयों का चिंतन-मनन करना एवं एक संभावित निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास करना, दर्शन का उद्देश्य है। इस दृष्टि से इसका क्षेत्र कितना व्यापक है, इसका सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। दार्शनिक यदि किसी वस्तु-विशेष के विषय में सोचता भी है तो केवल उसमें निहित सिद्धांतों को ही ढूँढ़ने का प्रयास करता है। इस रूप में दर्शन ने वैज्ञानिक रूप से अध्ययन के लिए अपने क्षेत्र का विस्तार किया है, जिसके अन्तर्गत वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करता है। मूल रूप से दर्शन अपने क्षेत्र के अध्ययन के लिए तीन भागों का निर्धारण करता है। उनमें से पहला है ज्ञान की समस्या का अध्ययन है, जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित विज्ञान आते हैं — (1). ज्ञान मीमांसा (2) तर्कशास्त्र (3) विज्ञान-

दर्शन (4). शब्द शास्त्र ।

दूसरा सत्ता की समस्या से संबंधित है, जिसके अन्तर्गत (1). तत्व-मीमांसा, (2). सत्ताशास्त्र, (3) प्रमाण विज्ञान, (4). ईश्वरशास्त्र आते हैं। तीसरा भाग मूल्यों से संबंधित है जिसका सम्बन्ध सामाजिक पक्षों से है। इसके अन्तर्गत (1) मूल्यशास्त्र, (2) सौंदर्यशास्त्र, (3). नीतिशास्त्र, (4). धर्मशास्त्र, (5) धर्मदर्शन, (6) समाजदर्शन, (7) अर्थ-दर्शन, (8). राजनीतिक-दर्शन, व (9) शिक्षा दर्शन आते हैं। इसी प्रकार अनेक ऐसे विषय हैं जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में दार्शनिक पहलू का अध्ययन करते हैं। साथ ही इन सभी क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाली समस्याएँ भी दर्शन की समस्याओं में आती हैं, जिसका विचार दर्शनशास्त्री को करना पड़ता है।

इस प्रकार दर्शन का स्वरूप एवं इसका क्षेत्र अत्यंत ही विस्तृत है और इसकी समस्याएँ भी। परंतु प्रत्येक मनुष्य के जीवन में दर्शन का ज्ञान आवश्यक होता है, क्योंकि यह एक ऐसा शब्द है जो हमें एक दिशा प्रदान करता है। यह मूल्यों का मानदण्ड, दिशा-बोध, निर्णय, व्यवहार की एवं विचारों की स्वतंत्रता, आत्म नियंत्रण, चिंतन-मनन आदि की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है जिससे हमें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता मिलती है। अतः दर्शन हमें एक सम्यक् दृष्टिकोण प्रदान करता है।